श्रीनिवास बालभारती

अनसूया

हिन्दी अनुवाद

डॉ. आर. सुमनलता

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्

तिरुपति

श्रीनिवास बालभारती - 167

अनसूया

तेलुगु मूल

एस.बी. सीताराम भट्टाचार्युलु

हिन्दी अनुवाद

डॉ. आर. सुमनलता

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्

तिरुपति

2015

Srinivasa Bala Bharati - 167
(Children Series)

ANASUYA

Telugu Version
S. B. Sitaram Bhattacharyulu

Hindi Translation
Dr. R. Sumanalatha

T.T.D. Religious Publications Series No. 1115
©All Rights Reserved
First Edition - 2015

Copies : 5000

Price :

Published by
Dr. D. SAMBASIVA RAO, I.A.S.,
Executive Officer,
Tirumala Tirupati Devasthanams,
Tirupati.

D.T.P:
Office of the Editor-in-Chief
T.T.D, Tirupati.

Printed at :
Tirumala Tirupati Devasthanams Press,
Tirupati.

दो शब्द

बच्चों का हृदय सुमनों की भांति निर्मल होता है। उत्तम कपूर से बढ़कर सुवासित उन के दिलों में बढिया संस्कार पैदा करना है। यदि उन में हम अच्छे संस्कार डालते हैं तो चिरकाल तक आदर्श जीवन बिताने के लिए सुस्थिर नींव पड जाती है। बचपन में संस्कार प्राप्त बच्चे भावी पीढियों के लिए समुचित मार्ग दर्शन कर सकते हैं। इसलिए हमारे इन होनहार बच्चों के लिए हमारी विरासत बने पौराणिक मूल्यों तथा इतिहास में निहित मानवता के मूल्यों का परिचय कराना अत्यंत आवश्यक है।

बिना लक्ष्य का जीवन निष्फल होता है। बच्चों को लक्ष्य की ओर प्रेरित कर उनके जीवन को सही मार्ग पर ले जाने की जिम्मेदारी बडों के ऊपर है। महान व्यक्तियों की आदर्शमय जीवनियों का परिचय करा कर उनमें प्रेरणा जगाने के उद्देश्य से 'श्रीनिवास बालभारती' का शुभारंभ किया गया है।

इस योजना का मुख्य लक्ष्य नैतिक मूल्यों के माधुर्य के बच्चों तथा सर्वत्र फैलाने का है। हमें यह जानकर अत्यंत आनंद हो रहा है कि बच्चे तथा परिवार के सभी लोग इन पुस्तकों का स्वागत कर रहे हैं। इससे तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् का मुख्य उद्देश्य कुछ हद तक सफल हो रहा है।

'श्रीनिवास बालभारती' की योजना तैयार करके उत्तम पुस्तकों का प्रकाशन करवा कर कम कीमत पर सब को उपलब्ध कराने का प्रयास, करनेवाले प्रो.एस.बी. रघुनाथाचार्य अभिनंदनीय हैं।

इस प्रकाशन में सहयोग देनेवाले लेखकों तथा कलाकारों के प्रति मैं अपना धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

कार्यकारी अधिकारी
तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति

प्राक्कथन

आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। अगर वे बचपन में ही महोन्नत सज्जनों की जीवनियों के बारे में जानकारी लें, तो अपने भावी जीवन को उदात्त धरातल पर उज्ज्वल रूप से जीने के मौके को प्राप्त कर सकते हैं। उन महोन्नत सज्जनों के जीवन में घटित अनुभवों से हमारी भारतीय संस्कृति, जीवन में आचरणीय मूल धार्मिक सिद्धान्तों तथा नैतिक मूल्यों आदि को वे निश्चय ही सीख सकते हैं। आज की पाठशालाओं में इन विषयों को सिखाने की संभावना नहीं है।

उपरोक्त विषयों को ध्यान में रखकर तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् के प्रचुरण विभाग ने डॉ.एस.बी. रघुनाथाचार्य के संपादन में स्थापित "बाल भारती सीरीस" के अन्तर्गत विविध लेखकों के द्वारा तेलुगु में रचित ऋषि-मुनियों व महोन्नत सज्जनों की जीवनियों से संबंधित लगभग १०० पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया। इनका पाठकों ने समादर किया और इसी प्रोत्साहन से प्रेरित होकर अन्य भाषाओं में भी इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया। प्रारम्भिक तौर पर इनको अंग्रेजी व हिन्दी भाषाओं में प्रकाशित किया जा रहा है। इनके द्वारा बच्चे व जिज्ञासु पाठकों को अवश्य ही लाभ पहुँचेगा।

इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का उद्देश्य यही है कि बच्चे पढें और बडे लोग इनका अध्ययन कर, कहानियों के रूप में इनका वर्णन करें, तद्वारा बच्चों में सृजनात्मक शक्ति को बढा दें। फलस्वरूप बच्चों को अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा निश्चय ही बचपन में ही मिलेगी।

एडिटर-इन-चीफ
ति.ति.देवस्थानम्

स्वागत

श्रीनिवासदयोद्भूता बालानां स्फूर्तिदायिनी ।
भारती जयताल्लोके भारतीयगुणोज्ज्वला ।।

जब खण्डान्तरों में सभ्यता की बू तक नहीं थी तब भरतवर्ष अपनी सभ्यता, संस्कार,धर्म, नैतिकाचरण के लिए प्रसिद्ध हो गया था। जो इस पुण्य-भूमि पर जन्मता है वह धर्माचरण में स्थिर होकर अधर्म का सामना करता है और क्रमशः ईश्वराभिमुखी होकर यशोवान होता है। ऐसे महात्माओं के प्रभाव से हमारे जीवन इह-पर दोनों प्रकार लाभान्वित होते हैं। उनके आदर्शमय जीवनों से स्फूर्ति पाता है और समझता है कि मैं इस महान भारत का वारिस हूँ; परंपरागत इस संप्रदाय की रक्षा करना मेरा कर्तव्य है। ऐसी भावना से वह अपने देश की सेवा के लिए तैयार रहता है।

वास्तव में इस देश में कई धर्मात्मा, वीरपुरुष, वीरनारियाँ पैदा हुईं उन्होंने संस्कृति की दृढ नींव डाली है। हमारा भाग्य यही है कि हमारी पैतृक-संपदा के रूप में उज्ज्वल इतिहास की परंपरा है। उनके आदर्शों के पालन करने से ही कोई विद्यावान-विज्ञानी बन सकता है। राष्ट्र के जीवन प्रवाह में वही विज्ञान अचल रहकर जीवन को सुशोभित करता रहता है। इसी सिलासले को आगे बढाने के लिए महात्माओं के जीवनियों को संक्षिप्त रूप में आपके सामने रखता हूँ।

हे भारत के भाग्यदाता बालक-आइए-स्फूर्ति पाइए

एस.बी. रघुनाथाचार्य
प्रधान संपादक

परिचय

अपने आप अतिथियों का आगमन देखकर पति-पत्नी अत्यंत प्रसन्न हुए। अतिथि सेवा करने के लिए सारी तैयारियाँ चल रही थीं। अतिथियों ने नियम रखा कि भोजन परोसने वाली महिला को विवसन होकर यह काम करना पड़ेगा। हाय! कैसी अग्नि परीक्षा! फिर भी गृहिणी ने हाँ कह दी। यह कैसा हठ! भोजन खिलाना चाह रहे हैं तो विवस्त्र होकर परोसने की बात कहना! ठीक है उन्होंने कह दिया तो कह दिया! किन्तु उसे मान लेना? उससे भी बड़ा विचित्र! क्या ऐसे कोई मिलेंगे?

हमारे देश के इतिहास में ऐसे मानने वाली एक मात्र साध्वी पतिव्रता नारी है। लोक कल्याण के लिए उन्होंने इसे स्वीकार कर, ध्रुवतारा के समान प्रकाशमान हैं। जानते हैं आप कि वह है कौन? वे हैं पतिव्रता शिरोमणि महान साध्वी अनसूया, जो महर्षि अत्रि की धर्मपत्नी थीं।

आश्रम में पधारे अतिथिगण तो साक्षात् त्रिदेव हैं। अनसूया के पातिव्रत्य की महिमा के कारण बालक बनकर उस माता के हाथ से उन्होंने भोजन किया। जगत की जननी कहलाने वाली तीनों देवियों को अनसूया के समक्ष हाथ जोड़कर विनती करनी पड़ी। सुमति के पति को जीवनदान देने के लिए अनसूया ने पूरे दस दिनों को एक में समेट कर दिखाया। नारदजी की भूख मिटाने के लिए इन्होंने गिल्लौरी को स्वादिष्ट घुघनी बनाकर खिलाया भी।

ऐसे अद्‌भुत कार्यों को अपने पातिव्रत्य की महिमा के कारण संभव कर दिखाने वाली अनसूया की जीवनी, सारे स्त्री समाज के लिए प्रेरणा प्रदान करे। अब पढिये उसी साध्वी की जीवनी।

- प्रधान संपादक

अनसूया

हमारी संस्कृति :

हम भारतीय हैं। हमारे देश के उज्ज्वल इतिहास की नींव हमारी संस्कृति है। यह सनातन और विशाल है। किसी भी देश के लिए इसे आदर्श माना जाता है। सभी कालों में बने रहने की इसमें शक्ति होने के कारण यह अतुलनीय (जिसकी तुलना नहीं की जा सकती) है। हमारी संस्कृति वेदोक्त बनकर प्रकाशमान हुई। उपनिषद् रहस्यों के माध्यम से इस संसार में शांति का संदेश भी व्याप्त हुआ। पुराणों के माध्यम से बड़े कोमल ढंग से समाज सुधार भी संभव कर दिखाने में हमारी संस्कृति सफल हुई।

सत्य-अहिंसा, क्षमा-शौच, दया-धर्म, शम-दम आदि गुणों को हमारी संस्कृति जन्म से ही सिखाती है। दैवभक्ति, पितृभक्ति, पतिभक्ति, गुरु भक्ति, स्वामी भक्ति और देशभक्ति के साथ-साथ सभी से भाई-चारे का व्यवहार भी हमारी संस्कृति प्रदान करती है। आध्यात्मिक चिन्तन, आत्मा का संयमन, आस्तिकता का भाव, सदाचार, परोपकार, सभी के सुख की अपेक्षा करना, विश्व बंधुत्व की भावना आदि सहज अलंकारों से हमारी संस्कृति सुसज्जित है।

कई महात्मा :

ऐसी भारतीय संस्कृति और विरासत के साक्षात मूर्तिमान कई स्त्री और पुरुषों का जन्म यहाँ हुआ है। उनकी जीवनियाँ चरितार्थ हैं। अनुसरणीय और लोक कल्याणकारी हैं। इनमें से कुछ ने निरूपित किया कि मनुष्य का जन्म केवल सुख और भोग के लिए नहीं बल्कि, अनवरत

तपस्या से निगमागमसार को ग्रहणकर, मानव जाति को जागृत करना है। त्रिविध प्रकार की शक्ति से, शक्ति नाथ से भी अधिक शूरता से शत्रुओं को थर-थर कंपा सकनेवाले कुछ राजा भी यहाँ हुए।

बाल्यावस्था से ही अत्यंत दैवभक्ति के साथ, संपूर्ण जगत में परमेश्वर के अस्तित्व का साक्षात्कार करने में कुछ बालक सफल हुए।

पितृवचन के पालन करने के लिए अपनी माता का वध कर, दुबारा वर के रूप में उसी ममता कई माता को पाने का बुद्धि बल किसी ने दिखाया। पिता के वचन का पालन करने के लिए राज्य को त्याग कर वनों में जाना और सारी कठिनाइयों का सामना करना ही नहीं बल्कि, अपनी प्रजा के कथन मात्र से अपनी सहधर्मचारिणी का परित्याग कर दिखाने वाले भी यहाँ हुए। गुरु दक्षिणा के रूप में अपने दाहिने हाथ के अंगूठे को भी समर्पित कर किसी ने अपनी गुरुभक्ति दिखाई तो किसी ने अपनी स्वामि भक्ति के लिए प्राणों को ही त्याग दिया। इसी प्रकार से पति को सर्वस्व मानकर, उनके लिए सूर्योदय को भी रोक सकने वाली साध्वियों का जन्म भी यहाँ हुआ। उनमें से महान पतिव्रता, साध्वी के रूप में प्रशंसित अनसूया का जीवन प्रस्तुत करने का एक छोटा सा प्रयत्न किया जा रहा है।

जन्म :

निरंतर विष्णु की पूजा में तत्पर कर्दम प्रजापति और उनकी सुन्दर पत्नी देवहूति की पुत्री अनसूया, स्वायंभु मनु की पौत्री थी। ख्याति, अरुंधती आदि इनकी बहने थीं। वेद-वेदांगों में पारंगत, सप्तर्षियों में से एक, महर्षि अत्रि इनके पति थे। बाल्यकाल से ही अनसूया वेदशास्त्रों से परिचित थी। विनय और विवेक, इनके सहज आभूषण थे। यथासमय

पति की सेवा करने में इन्हें अत्यधिक रुचि थी। अनसूया की पतिभक्ति से प्रसन्न होकर महर्षि अत्रि ने अष्टाक्षरी मंत्र का उपदेश दिया। उसी मंत्र की उपासना से उन्होंने योग स्थिति को पाकर, महर्षियों के लिए भी पूजनीय श्रेष्ठस्थान को पाया।

पतिव्रता :

अनसूया महान पतिव्रता नारी थी, जिनके पातिव्रत्य की महिमा ने सारे संसार को कई बार आश्चर्य में डाल दिया । मुनि कौशिक की पत्नी सुमति ने अपने पति के शाप के संदर्भ में सूर्योदय को रोक दिया। अनसूया ने दस दिनों को एक दिन में समेट कर सूर्य का उदय करवाया। सुमति के मृतक पति को पुनर्जीवित करवाया। नारदजी की इच्छा के अनुसार बिल्लौर को चने में बदल कर उनकी भूख मिटाई। तीनों लोकों की मातायें लक्ष्मी, सरस्वती और पार्वती पर विजय पाया। भगवान श्रीराम अपने वनवास के समय सीता समेत इनके आश्रम आए। तब अनसूया ने मुनि अत्रि के आदेशानुसार सीता को पातिव्रत्य धर्म का बोध कराया। कभी न मुकुलित वाले फूल, मनोहर आभूषण, मंगलकारी वस्त्र और अंगरागों की भेंट सीता को दी। अपनी परीक्षा लेने आए त्रिमूर्तियों को शिशु बनाकर लालन किया।

लोकमाताओं को वापस उनके पतियों को देकर अनसूया, उनकी सास बनीं। त्रिमूर्तियों के अंश से दत्तात्रेय नामक पुत्र को पाया।

पतिव्रता धर्म :

मन, कर्म और वचन से अपने पति की सेवा करनेवाली नारियाँ पतिव्रता कहलाती हैं। पति की सेवा करना ही इनका नियम है। इन्हें ही साध्वियाँ या सतीरत्न कहते हैं। पातिव्रत्य - इनका जीवन है और पति ही

इनके दैव हैं। पति रूपी देव की आराधना करना इनकी दैनिकी है। जीवन के लक्ष्य को साधने में सहकार देते हुए पति के मन को प्रसन्न रखना इनका परम ध्येय होता है। पति जिस पर्णशाला में वास करते हैं, वही इनके लिए अमूल्य रत्नशाला है। नीवारान्न ही ये क्षीरान्न मानती हैं। पति के चरण ही मृदुशय्या है। पति के साथ आत्मा को संयमित करना, इनकी जीवन शक्ति को बढानेवाला रसायन है। सदा उनकी सेवा करना इनके लिए अहोभाग्य है।

पतिव्रतारत्न :

ऐसी पतिव्रताओं में सुमती, सुकन्या, अहल्या, अरुंधती, लोपामुद्रा आदि ऋषि पत्नियों के नाम गिने जाते हैं। क्षत्रिय नारियों में सीता, सावित्री, चंद्रमती, दमयंती, ऊर्मिला, शकुंतला आदि का नाम लिया जाता है। मंदोदरी, सुलोचना आदि राक्षस कुल की स्त्रियों का नाम भी बडे आदर के साथ लिया जाता है।

ध्रुवतारा :

ऊपर उल्लेखित सभी पतिव्रता नारियों में से अनसूया का अपना एक विशिष्ट स्थान है। अन्य पतिव्रताओं की जीवनियों से इनका जीवन भिन्न है। क्योंकि उनके विजयी होने में और अनसूया के विजयी होने में बहुत बड़ा अंतर है। दूसरे लोग जीवन केवल अपने लिए जीते हैं। उनके जीवन में घटी घटनायें उनके अपने हित अथवा अहित से जुड़ी रहती हैं। अनसूया के जीवन की यात्रा में भी अनेकानेक घटनायें घटीं। किन्तु वे सारी परहित साधने के लिए घटी असाधारण घटनाएं थीं। जिन्हें देखने वाले देखते ही रह गए। देवकार्य हेतु दस दिनों को एक दिवस में समेटना क्या कोई साधारण विजय है? मांडव्य महर्षि के अचूक शाप

फल के विपरीत मृतक व्यक्ति को दुबारा प्राणदान करना, क्या असाधारण विजय नहीं कहलाएगा? सृष्टि, स्थिति और लय के कर्ताओं को नन्हे से शिशु बनाकर लोरी गाना कोई छोटी-मोटी बात तो नहीं कहलाएगी। ऐसे गिनते जाएँ तो पतिव्रता नारी अनसूया के विजयों की संख्या अनगिनत निकलेगी । इसीलिए अनसूया पतिव्रता नारियों में अग्रणी कहलाती हैं। वे एक ध्रुवतारा के समान प्रकाशमान हैं। स्वाभिमानी पतिव्रता रत्न के रूप में प्रसिद्ध हुई ं।

महर्षि अत्रि की प्रशंसा :

अनसूया, ब्रह्मा के मानस पुत्र और सप्तर्षियों में अग्रणी महर्षि अत्रि की पत्नी थीं। तपोधनी ऋषि अत्रि के पावन आश्रम में सदा महर्षियों का आवागमन हुआ करता था। महर्षि अत्रि के मन में अनसूया के प्रति अपनी सहधर्मचारिणी होने के नाते अपार प्रेम तो था ही, साथ में 'साधना' के कारण अपनी पत्नी के प्रति उनके मन में अपार आदर भी था। सीता, राम और लक्ष्मण अपने वनवास के समय इनके आश्रम में पधारे। उनके समक्ष महर्षि, अनसूया के विजयों के बारे में प्रस्तावित करते हैं। उन्होंने बताया कि एक समय में भयंकर अकाल पड़ने के कारण दस वर्ष तक जब सारा संसार भूखों मर रहा था, तब अनसूया ने अपने तपोबल से कंदमूल और फलों की सृष्टि करने के साथ-साथ गंगा को भी प्रवाहित करवाया था। उन्होंने यह भी बताया कि अनसूया दस हजार वर्ष तक तपस्या करती रहीं और चान्द्रायण व्रत इत्यादि व्रतों का भी नियमित रूप से संपन्न किया। उन्होंने यह भी सूचित किया कि दैवकार्य को संपन्न करवाने के लिए अनसूया ने दस दिनों की अवधि को एक दिन में सिमटा लिया था। ऐसी विजयी अनसूया, महर्षि के अनुसार

सारे विश्व के लिए पूजनीय है। अनसूया को कीर्तिमति के रूप में उन्होंने प्रकीर्तित किया था। ऐसे महान कार्यों को साधने के ही कारण सारे विश्व के लिए अनसूया, अनुसूया ही ठहरी। अपनी पत्नी अनसूया के प्रति महर्षि अत्रि के मन में विशेष गौरव था।

संस्कारी दंपति :

अनसूया के मन में भी अपने पति महर्षि अत्रि के प्रति अपार गौरव था। पति की शुश्रूषा करने में अनसूया असमान मानी जाती। महर्षि अत्रि के आदेश अनसूया के लिए वेद तुल्य थे। वनवास करने आई सीता को अनसूया अपने पति अत्रि के आदेशानुसार सांत्वना देती हैं। राम का साथ देने आई सीता की प्रशंसा भी करती हैं। सती के धर्मों को समझाती हैं। अत्रि और अनसूया को उत्तम संस्कारी महापुरुषों में गिना जाता है।

व्यसनों का दास बना ब्राह्मण :

एक समय में मधुरापुरी नामक गाँव में 'कौशिक' नामक ब्राह्मण रहता था। उसकी पत्नी का नाम सुमति था। कौशिक के पास अपार धन था। साधु स्वभाव की सुमति की प्रशंसा उसकी निरंतर पति सेवा के कारण हुआ करती थी। कुछ समय के बाद, धन के कारण कौशिक मदमस्त होता गया। धीरे-धीरे, उसका मदिरा पान आरंभ हुआ। कुछ ही दिनों में वह वेश्यालोलुप भी हो गया। उसकी सारी संपत्ति वेश्या के हाथ चली गयी। भिखारी हो जाने के बाद भी कौशिक, मदिरा पान और वेश्या को छोड़ नहीं सका। अपने दुराचारी पति को देख, सुमती मन ही मन दुःखी हुआ करती थी, जो सभी प्रकार के व्यसनों का दास हो गया। कौशिक को कोढ़ का रोग लगने पर भी उसमें कोई बदलाव नहीं आया।

मुझे वही गणिका चाहिए :

ऐसी स्थिति में सुमति को जीने के लिए भिक्षाटन करने के अलावा और कोई साधन नहीं बचा। वृक्ष के नीचे रहना पड़ा। फिर भी कौशिक के व्यवहार में रत्ती भर भी बदलाव नहीं आया। समय बीतता गया। एक बार भिक्षा दे रही एक गणिका (वेश्या) को देखकर, कौशिक ने सुमति से आग्रह किया कि इसे मैं चाहता हूँ अतः मुझे इससे मिलवावो। सुमति अपने पति की इस इच्छा को सुनकर दुःखी हुई और उसने टोकने का भरपूर प्रयत्न किया। किन्तु सब बेकार! सुमति को उस गणिका को मनवाने के लिए बहुत प्रयास करना पड़ा। कौशिक को एक टोकरी में बिठाकर उस वेश्या के घर ले चली। उस वेश्या ने बहुत समझाकर कौशिक की आँखे खुलवाई। उसने सुमति को एक सती के रूप में आदर करने की सलाह कौशिक को दी। तब जाकर कौशिक का अज्ञान मिटा। सुमति अपने पति को टोकरी में बिठाकर घर की ओर चली।

सूर्योदय न हो :

उसी समय मांडव्य नाम के एक महान ऋषि पर तस्करी का आरोप लगाकर, उन्हें शूली पर चढ़ाया गया था। अंधकार में कौशिक का पैर मांडव्य को लगने के कारण उनकी पीड़ा बढ़ गई। अतः उन्होंने शाप दिया कि दस दिनों के बाद आनेवाले सूर्योदय में तुम्हारे सिर के टुकड़े होकर, तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी। सुमति मांडव्य मुनि के आगे कई प्रकार से गिड़गिड़ाकर क्षमा याचना करने पर भी ऋषि मौन ही रह गए। सुमति ने यहाँ तक कहा कि मेरे पति को छोड़कर मुझे शाप दीजिए। किन्तु मांडव्य ने कोई उत्तर नहीं दिया। तब पतिव्रता सुमति ने सोचा कि जगत की रक्षा करने वाले सूर्य देव क्या मेरे सौभाग्य को मिटा देंगे? कभी नहीं। इसी विश्वास के साथ सुमति ने भी अपनी प्रतिक्रिया दिखाते हुए

शाप दिया कि ''अगर मैं, अपने पति की सेवा त्रिकरण शुद्धि से (अर्थात् मन, वचन और कर्म से)' करनेवालों में से हूँ तो सूर्योदय ही न हो!' पतिव्रता नारी के इस शाप के कारण सूर्योदय नहीं हुआ।

मैं पुनः जीवन दूँगी :

सारे विश्व में घना अंधकार छा गया। यज्ञ आदि के निर्वाह में रुकावट आई। सारा संसार अचेत हो जाने के कारण, दैनिक कार्यों में विघ्न पड़ा। देवताओं को इस बात की जानकारी हुई और वे सब ब्रह्मा की शरण में गए। ब्रह्मा ने उन्हें महान पतिव्रता नारी अनसूया से प्रार्थना करने का सुझाव दिया। देवता गण महर्षि अत्रि के आश्रम में पहुँचे और पतिव्रता शिरोमणि अनसूया से उन्होंने सारी बात बताई। अनसूया ने जाना कि सुमति के पातिव्रत्य के कारण सूर्योदय नहीं हुआ। अतः उन्होंने पूरे दस दिनों को एक दिन में समेट दिया। अनसूया ने सुमति से पुनः सूर्योदय करवाने का अनुरोध किया तो महर्षि मांडव्य के शाप के कारण कौशिक की मृत्यु हो गई। किन्तु महान साध्वी अनसूया ने उसे पुनः जीवन दान दिया। भगवान की कृपा से कौशिक स्वस्थ भी हुआ। सुमति और कौशिक सुखी जीवन जीने लगे। इस प्रकार अनसूया ने सुमति के सुहाग को बचाया।

सियाराममय :

सीता और राम ने संपूर्ण मानव जाति के लिए एक पवित्र और आदर्श जीवन जीने की विधि को आचरण में लाकर दिखाया। ये पति-पत्नी पातिव्रत्य और एकपत्नी व्रत के प्रतीक बने हैं। भारतीय जनमानस में, पीढियों से सीता और राम के लिए पवित्र स्थान है। इनकी आराधना की जाती है। भारत के प्रत्येक गाँव, प्रत्येक प्रदेश और प्रत्येक भारतीय का हृदय 'सियाराममय' है।

अनसूया की प्रशंसा :

ऐसे महान दंपति अपने वनवास के समय महर्षियों के दर्शन करते हुए महर्षि अत्रि के आश्रम पहुँचे। महर्षि ने इनका सादर स्वागत किया और अपनी सहधर्मचारिणी अनसूया से सीता-राम का परिचय करवाया। अपनी पत्नी अनसूया की तपः साधना का, व्रत और आचरण की महिमा का परिचय विस्तार से ऋषि सीता-राम को देते हैं। अत्रि महर्षि राम को अपना पुत्रवत मानते हुए अनसूया को मातृवत समझकर सीता को उनके पास भेजने के लिए राम से अनुरोध करते हैं। राम की अनुमति लेकर सीता, अनसूया के पास जाकर उनका अभिवादन कर, कुशल-मंगल पूछती हैं। अनसूया, इस वनवास को लेकर दुःखी न होने का हित वचन सीता को देती हैं। राम का अनुगमन कर वनवास करने आई सीता की भूरि-भूरि प्रशंसा करती हुई अनसूया, उन्हें पतिव्रता धर्मों का उपदेश इस प्रकार देती है।

सतीधर्म :

‘हे सीता! स्त्री के लिए पति, चाहे नगर में हो या वन में, सदा पूजनीय ही रहता है। इसी प्रकार से वह पति चाहे दुरात्मा हो अथवा पुण्यात्मा, उससे प्यार करते रहना चाहिए। वह कामुक हो अथवा निर्धन, पति ही पत्नी के लिए साक्षात देवता है। चाहे कितना भी आलोचना करे, फिर भी पत्नी के लिए पति से बढ़कर और कोई सगा-संबंधी नहीं होता। सभी अवस्थाओं में वही पत्नी का रक्षक होता है। इस सूक्ष्म धर्म को नहीं जानने के कारण कुछ दुष्ट स्त्रियाँ, अन्य पुरुषों को चाहकर अपयश पा रही हैं और अपना धर्म भी वे भ्रष्ट कर रही हैं। उन्हें नरक में जाना पड़ेगा। तुम्हारी जैसी गुणी स्त्रियाँ सती धर्म का आचरण कर, स्वर्ग पहुँचती हैं। तुम भी पतिव्रता के धर्मों का आचरण कर अपार यश को पाओ। सौभाग्यवती बनो।’

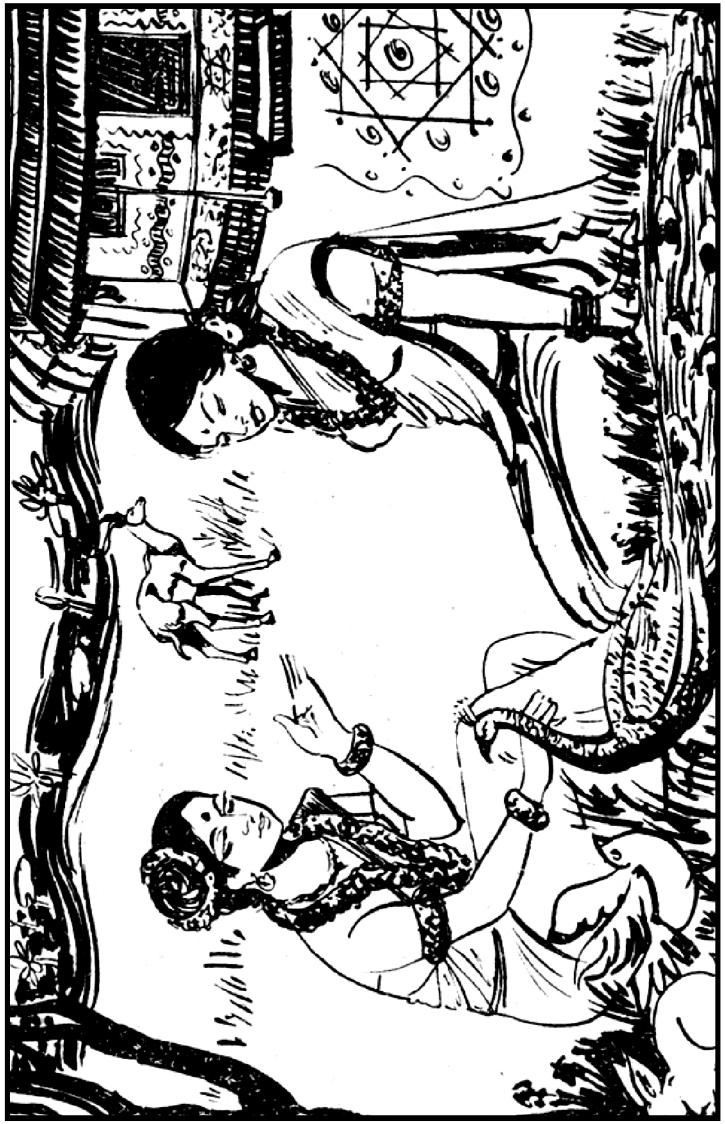

न कुम्हलानेवाले सुगंधित पुष्प :

सीता अनसूया से राम के सदाचरण के बारे में बताती है। प्रसन्न होकर अनसूया, सीता को कभी न कुम्हलानेवाले, सदा परिमल को बिखेरनेवाले पुष्पों के साथ-साथ मंगलदाई आभूषण, वस्त्र और शरीर पर लगाने के लिए सुगंधित लेप आदि भेंट करती हैं। सीता उन्हें बड़े आदर के साथ स्वीकारती है। अनसूया का अभिवादन कर, उनके आशीर्वाद पाती हैं। अनसूया - पतिव्रता धर्मों का आचरण स्वयंकर, अन्य स्त्रियों का मार्गदर्शन करती हैं लोकमाता, पूजनीया सीता को भी सती स्त्री के धर्मों का बोध करने का श्रेय अनसूया को ही मिलता है।

कलहभोज :

देवर्षि नारदजी ब्रह्मा के मानसपुत्र थे। महान विष्णु भक्त होने के कारण, निरंतर 'नारायण' नामोच्चारण में रत रहना उनका नियम था। तीनों लोकों में बड़ी स्वेच्छा से संचार कर सकते थे। महर्षियों के लिए भी वे मान्यवर थे। पवित्र कार्यों में प्रधान भूमिका इनकी ही रहती है। कभी-कभी किसी-किसी की परीक्षा लेते समय उत्पन्न कठिनाई का सामना करने के लिए भी वे कभी झिझकते नहीं। सत्कार्यों को सही ढंग से निर्वाह करने के लिए नारदजी कभी-कभी कलहों को भी जन्म देते थे। इसीलिए वे ''कलहभोज'' के नाम से भी प्रसिद्ध हुए।

बिल्लौर की घुघनी :

एक बार नारदजी को अचानक बहुत भूख लगी। उन्होंने बिल्लौरों को गठरी में बाँधा। उन्होंने बहुत सोचा कि इन्हें कौन पकाकर घुघनी बनाएगा। अंत में वे लक्ष्मी, सरस्वती और पार्वती के पास पहुँचे। तब उन तीनों देवियों में चर्चा हो रही थी कि हमसे बढकर महान पतिव्रता

नारी और कौन हो सकती है। नारदजी ने उन तीनों देवियों से कहा कि कई दिनों से मैं भूखा हूँ। इन बिल्लौरों की घुघनी पकाकर मेरी भूख मिटाना। तीनों देवियाँ इसे सुन अवाक् रह गईं। बिल्लौरों की घुघनी! असंभव है। उन्होंने कहा कि 'हे देवर्षि नारद! आपके इच्छानुसार जो ऐसी घुघनी पकाकर आपकी भूख मिटायेंगी हम उनकी दासी बनने के लिए तैयार हैं। नारदजी ने सूचित किया कि ऐसे पकाने की क्षमता मानव स्त्रियों में है जिन्हें हम पतिव्रता कहते हैं। इन बिल्लौरों की घुघनी पकवाकर मैं आपको दिखाऊँगा। नारदजी हरिनाम का स्मरण करते हुए पृथ्वी पर चले आए।

घुघनी बने बिल्लौर :

नारदजी सीधे महर्षि अत्रि के आश्रम पहुँचे। अनसूया और अत्रि दंपति ने देवर्षि का स्वागत किया। उचित आसन पर बिठाकर उनका आदर सत्कार किया। नारदजी को भूख सता रही थी। उन्होंने गठरी खोलकर बिल्लौरों को साध्वी अनसूया के समक्ष रखा और अनुरोध किया कि इनकी घुघनी पकाकर मुझे खिलाएं। अनसूया ने मंदहास के साथ बिल्लैरी को अपने हाथ-में लिया। अपने पति का नाम स्मरण करते ही घुघनी में परिवर्तित हो गए। नारदजी की भूख मिटी।

उन्होंने अनसूया की अद्वितीय महिमा का गान किया और प्रशंसा की। उनसे आज्ञा लेकर नारदजी तीनों देवियों के समक्ष प्रकट हुए। पतिव्रता अनसूया की महिमा की प्रशंसा करते हुए उन्होंने घुघनी दी। देखकर तीनों देवियाँ आश्चर्यचकित रह गईं। अनसूया के जीवन में इस घटना को एक मील का पत्थर माना जाता है। इसी के कारण वे तीनों लोकों में पूजनीया बनीं। साधन के द्वारा मानव भी देवता बन सकता है।

देवशक्ति से भी अधिक शक्ति संपन्न हो सकते हैं। यही घटना एक बड़ा उदाहरण है।

सृष्टिकर्ता ब्रह्मा :

ब्रह्मा, विष्णु और शंकर को त्रिमूर्ति कहते हैं। इनके ही कारण इस संसार में सृष्टि, स्थिति और संहार होता है। सृष्टिकर्ता ब्रह्मा का आवास सत्यलोक है। चराचर जगत के सभी प्राणियों को जीवन प्रदान करते हैं। ये विधाता और चतुर्मुख आदि नामों से भी प्रसिद्ध हैं। वाग्देवी सरस्वती इनकी पत्नी हैं। इनका वाहन हंस है। ये रजोगुणकारी हैं। जब ये जगे रहते हैं तब सारी जीव राशि में चैतन्य का संचार होता है। इनकी निद्रावस्था में सारा संसार जड़वत हो जाता है।

स्थिति के कारक विष्णु :

स्थिति के कारक विष्णु का आवास वैकुण्ठ है। सकल चराचर जगत की रक्षा का भार इन्हीं पर रहता है। इन्हें नारायण के नाम से भी जाना जाता है। वैभव और संपत्ति की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी इनकी पत्नी हैं। इनका वाहन गरुड़ है। सात्विक गुणों के प्रदाता नारायण, सर्वान्तर्यामी हैं। सभी जीवों में, सभी स्थानों पर, पंचभूतों में वे व्याप्त रहते हैं।

विलय के कारक शंकर :

तीसरे देवता शंकर, कैलाश पर्वत पर निवास करते हैं। ये लयकारक हैं। चराचर सृष्टि का विलय करना इनका कर्तव्य है। इन्हें शिव, हर आदि नामों से भी संबोधित करते हैं। पार्वती इनकी पत्नी हैं और वृषभ इनका वाहन। ये तमोगुणकारी हैं।

वाहन आगे नहीं बढ़ सके :

सृष्टि, स्थिति और प्रलय के कारक त्रिमूर्तियों को एक बार मेरुपर्वत की ओर जाने की आवश्यकता पड़ी। ब्रह्मा हंस पर चढ़े। विष्णु गरुड़वाहन पर आरूढ़ हुए और शंकरजी वृषभ पर सवार होकर आकाश में अग्रसर हुए। किन्तु एक स्थान पर आकर उनके वाहन अग्रसर नहीं हो पा रहे थे। त्रिदेवों ने बहुत प्रयत्न किया किन्तु सफल नहीं हुए। तब गरुड़जी ने बताया कि, ''हे देव! नीचे महान ऋषि पुंगव अत्रि का आश्रम है। यह अत्यंत पावन प्रदेश है। उनकी सहधर्मचारिणी अनसूया की गिनती महान पतिव्रता नारियों के रूप में होती है। साध्वी अनसूया और महर्षि अत्रि के आश्रम के ऊपर से होते हुए जाना असंभव माना जाता है।'' इसे सुन, त्रिदेव अपना मार्ग बदलकर यात्रा पूरी करते हैं। अपने-अपने आवास पहुँचने के बाद भी उनके मन में अनसूया के पातिव्रत्य की महिमा के बारे में विचार उठते रहते हैं। उन्हें लगा कि एक ऋषि पत्नी की ऐसी महानता! इतना प्रभाव इतनी शक्ति महान आश्चर्यकारी है! उनके मन में विचार उठा कि ऐसी साध्वी अनसूया के दर्शन कर, उनकी महिमा को विश्वविख्यात अवश्य करना चाहिए।

हमारा आतिथ्य स्वीकारिए :

अनसूया की परीक्षा लेने चले त्रिदेव.. ऋषियों का वेष धारण कर, महर्षि अत्रि के आश्रम पहुँचे। अनसूया समेत मुनि अत्रि ने उनका सादर स्वागत किया। उनकी स्तुति की और उन महानुभावों के आगमन पर अपना हर्ष प्रकट किया। यथोचित आदर-सत्कार कर अपने आतिथ्य-स्वीकारने की प्रार्थना की। ऋषि वेषधारी त्रिदेवों ने सहमति दी और उनके अतिथि बनकर ठहरे।

हमारा एक नियम है :

अनसूया ने पूरी श्रद्धा और निष्ठा के साथ भोजन पकाया। महर्षि अत्रि ने तीनों देवों को बड़े आदर के साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित किया। त्रिदेवों ने ऋषि से कहा - ''महर्षि! हमारा एक नियम है। हमें भोजन परोसनेवाली महिला को विवसन रहना चाहिए। तभी हम आपका आतिथ्य स्वीकार कर सकते हैं, वरना नहीं।'' अत्रिमुनि ने उनका अभिवादन कर कहा - ''हे महानुभाव आप तीनों ने एक साथ यहाँ आकर हमें अनुग्रहीत किया। इससे बढ़कर हमें और क्या चाहिए? आपके दर्शन मात्र से हमारा जन्म धन्य हो गया है। आप जैसे महात्माओं को भोजन खिलाने का भाग्य क्या सभी को मिल सकता है? हमारे भाग्य के कारण हमें प्राप्त हो रहा है। हमारे आश्रम में आपके नियम का भंग कभी नहीं होगा। आपकी इच्छा के अनुसार, आपके नियम का पालन अवश्य होगा। वरना उसे महान अपराध माना जाएगा।'' सादर उनको साथ लेकर, महर्षि अत्रि ने पत्नी अनसूया को उनके नियम के बारे में सूचित किया।

त्रिदेव बालक बन गए :

भोजन पूरा तैयार कर अनसूया ने आसन डाले, जिनपर तीनों देव विराजमान हुए। अनसूया अपने पति अत्रि महर्षि का तीनबार स्मरण किया। अपने हाथ के जल को त्रिदेवों पर छिड़ककर उस साध्वी ने कहा ''मेरे पातिव्रत्य को कोई आँच न आए।'' बस, तीनों देव बालक बन गए। अनसूया ने उनके नियम का पालन करते हुए भोजन को परोसा और बड़े वात्सल्य से खिलाया भी।

अपने पतियों के लिए खोज :

अनसूया त्रिदेवों को बाल रूप देने के पश्चात् उन्हें पुत्रवत पालने लगी। उनकी किलकारी और तोतली बोली सुन-सुनकर प्रसन्न हो जाती। महर्षि अत्रि भी स्वयं अपनी पत्नी की महिमा से प्रभावित हुए। उन बालकों के साथ वे भी आमोद -प्रमोद करने लगे। बस, बालक बने त्रिदेव भूलोक में ही रह गए। लक्ष्मी, पार्वती और सरस्वती को अपने पतियों के बारे में कुछ भी पता नहीं चला। वे अत्यंत चिन्तित थीं। उन्हें डर लगा कि कहीं राक्षसों ने उन्हें कुछ हानि तो नहीं पहुँचाई? चिन्तित इन तीनों देवियों के पास एक बार नारदजी का आगमन हुआ। उन्होंने अपने-अपने नाथ के बारे में देवर्षि से पूछा।

त्रिदेवों को अपना रूप वापस मिला :

देवर्षि नारद ने उनसे कहा कि, 'इस बीच मैं महर्षि अत्रि के आश्रम गया था। वहाँ तीन बालक साध्वी अनसूया के हाथों पल रहे हैं। सभी लोग अनसूया के भाग्य को सराह रहे हैं। अनसूया की महिमा अपरंपार है और वे उन तीनों बच्चों को पूरे पुत्रवात्सल्य के साथ पाल-पोस रहीं है। उन तेजस्विना बालकों को देखकर मुझे आपके पतियों का स्मरण आ रहा था। अवश्य जाकर साध्वी अनसूया से आपको 'पति की भिक्षा' मांगनी ही पड़ेगी।' तीनों देवियों के लिए और कोई उपाय नहीं था। अतः उन्होंने अनसूया से पति की भिक्षा मांगने का निश्चय किया।

तीनों देवियाँ अनसूया के पास पहुँचीं। उनका स्वागत-सत्कार करने के बाद अनसूया ने उनसे प्रश्न किया कि आप ऐसी दुःखी क्यों हैं? तुरन्त तीनों देवियों ने पतिभिक्षा माँगी। इन तीनों लोक माताओं की दीन स्थिति को देखकर अनसूया का मन आर्द्र हो गया। तुरन्त बालक बने

तीनों देवों पर अनसूया से मंत्रजल छिड़कते ही, वे अपने-अपने सहजरूपों में प्रकट हुए।

दत्तात्रेय का जन्म :

तीनों देवियों के वदनों पर छाई उदासी मिट गई और चमक आ गई। त्रिदेवों ने अनसूया की भूरि-भूरि प्रशंसा की कि साध्वी अनसूया की महिमा अपरंपार है और उस पतिव्रता को अनुग्रहीत करने के लिए वर देने का निश्चय किया। अनसूया ने माँगा कि आप तीनों मेरे पुत्र बनकर मुझे अनुग्रहीत करें। प्रसन्न होकर तीनों देवों ने अपने-अपने अंश से दत्तात्रेय नामक पुत्र को प्रदान किया। अत्रि और अनसूया के जन्म धन्य हुए।

श्रेष्ठ जन्म-मानव का जन्म :

संपूर्ण सृष्टि का विभाजन जड़ और चेतन के रूप में होता है। संपूर्ण सृष्टि में अनगिनत प्राणी हैं। उन्हें जरायुज (माता के गर्भ से जन्म लेनेवाले मनुष्य, गाय आदि) स्वेदज (गरमी के कारण जन्म लेने वाले कीड़े, जूँ आदि) अंडज (अंडों से जन्म लेने वाले पक्षी, साँप आदि), उद्भिज (पृथ्वी को चीर कर जन्म लेने वाले वृक्ष, पेड़-पौधे आदि) के नामों से वर्गीकृत किया गया है। इन सभी में मानव का जन्म सर्व श्रेष्ठ है क्योंकि उसके पास ज्ञान होता है।

बालक ही भविष्य है :

मनुष्य चाहे जितना भी ज्ञानी क्यों न हो, किन्तु उसे प्राकृतिक विपदाओं का सामना करना ही पड़ता है। नाना प्रकार के कष्टों का सामना करने की शक्ति, उसे बचपन से प्राप्त उत्तम संस्कारों से ही

मिलती है। उत्तम संस्कारी बच्चे ही संपूर्ण समाज के लिए गर्व के कारण बनते हैं। वे अपने जीवन के साथ-साथ चारों ओर के समाज को सुधार कर सुखी जीवन बिता सकते हैं। साक्षात भगवान के रूप माने जाते हैं।

अधम संस्कारी लोग संपूर्ण जाति को कलंकित कर देते हैं। उनके कारण पूरी जाति अपमानित होती है। वे अपना जीवन दुःखमय बनाते ही हैं साथ में राक्षसों के समान चारों ओर के समाज को भी नाश कर डालते हैं।

सुनहरा मार्ग :

मानव का मन बड़ा ही कोमल होने के साथ साथ बड़ा शक्तिशाली भी होता है। इस मन को सन्मार्ग पर अग्रसर होना अत्यंत आवश्यक है। मनुष्य के जीवन के उत्थान अथवा पतन के लिए मन ही प्रधान कारण बनता है। उत्तम संस्कारी और मनोबल से युक्त होना है तो मानव को बचपन से अच्छे उपदेश मिलने चाहिए। दैवभक्ति, माता-पिता के प्रति भक्ति, गुरुभक्ति, देश भक्ति, सत्य, शौच, शांति, करुणा, धर्म, सहन, विद्या, विनय, विवेक आदि सद्‌गुणों को विकसित करने से ही एक आदर्श जीवन जी सकेंगे। उनके जीवन को सही ढंग से मूल्यवान बनने के लिए महान पुरुषों की और साध्वियों की जीवनियों का अध्ययन करना चाहिए। उनके आचरण, जीने का ढंग, प्राप्त विजय आदि की प्रेरणा, मनुष्य जीवन का स्वर्णिम मार्ग प्रशस्त करता है।

कुल मिलाकर अनसूया एक आदर्श पुत्री, आदर्श महिला, पतिव्रता, तपस्विनी, योगिनी, प्राणदात्री, पतिव्रता धर्मों का बोध-करनेवाली, साधना का साक्षात् स्वरूप बनकर, महिमान्वित साध्वी के रूप में हमें प्रेरित करती हैं।

महासाध्वी अनसूया की जीवनी समाज के लिए नया उत्साह प्रदान करती है। उनकी पवित्रता और साधना, संपूर्ण स्त्री वर्ग के लिए प्रेरणा देती है।

समाप्त

* * *